Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 16, Issue: Sep. 2025 | Impact Factor 4.765

शिक्षा के क्षेत्र में छोटू राम का योगदान

ललित कुमार
पी.एच.डी. शोधार्थी, इतिहास विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोविन्दगढ़ (पंजाब)
राम सिंह गुरना
शोध निर्देशक एवं प्रोफेसर, इतिहास विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोविन्दगढ़ (पंजाब)

सारांश

ब्रिटिश राज में पंजाब प्रांत में शिक्षा का स्तर काफी कम था परन्तु छोटू राम चाहते थे कि सरकार पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा के लिए अधिकतम सुविधाएं प्रदान करे, इसके साथ-साथ वह यह भी चाहते थे कि ऐसे पिछड़े क्षेत्रों के लोग इन शिक्षण संस्थानो का अधिक से अधिक उपयोग भी करे। शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होंने हरियाणा के रोहतक जिले में एग्लो संस्कृत जाट हाई स्कूल की स्थापना 26 मार्च 1913 ई. में की। कुछ समय पश्चात रोहतक में ही जाट हीरोज हाई स्कूल की स्थापना कर दी गई। इसके तुरंत पश्चात् ही यूनियनिस्ट पार्टी ने 1923 ई. में पंजाब में शिक्षा स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पेश किए गए। छोटू राम द्वारा शिक्षण संस्थानो में सरकारी अनुदान प्रणाली में भी संशोधन किया गया था। इस संशोधन की महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने बिना किसी पक्षपात से किसी कॉलेज के अनुदान में वृद्धि और कमी नहीं की। इसके अतिरिक्त छोटू राम द्वारा महिलाओं की शिक्षा के लिए भी कई कदम उठाए। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण ईकाईयो की स्थापना की। छोटू राम पंजाब के विभिन्न जिलो में महिलाओं के लिए शिक्षण संस्थानो की स्थापना करनाचाहते थे।

मुख्य शब्द :- छोटू राम, शिक्षा, छात्र, पंजाब, शिक्षण संस्थान।

PURVA MIMAANSA

भूमिका

20वीं शताब्दी के दूसरे दशक के आरम्भ में छोटू राम ने अपने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था। इसी समय भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं की सामाजिक और राजनीतिक सोच में तत्कालीन समाज को लेकर काफी परिवर्तन आना शुरू हो गया था। छोटू राम की सोचकेअनुसार भारतीय समाज में पिछड़े वर्ग और अनुसूचित जातियों का पिछड़ापन देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उन्नति में बाधा है। इसलिए यदि भारत को सभ्य राष्ट्रो की श्रेणी में शामिल होना है तो इसके लिए दलित वर्गो के उत्थान के कार्य तत्काल होने चाहिए। इसी समय 1917 ई. में कांग्रेस पार्टी ने भी अस्पृश्यता निवारण को अपनी राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख अंग के रूप में स्वीकार कर लिया। इस समय छोटू राम भी तत्कालीन कांग्रेस पार्टी के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे। (सीतारामयण, 52) हरियाणा (तत्कालीन दक्षिणी-पूर्वी पंजाब) में आर्य समाज का प्रभाव अपने उत्कर्ष पर था। छोटू राम आर्य समाज द्वारा किए जा रहे सामाजिक और शैक्षिक सुधारो के कार्यो

के समर्थक भी थे। उन्होंने समाज-कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यों को प्राथमिकता दी, जो इस प्रकार है-

1. पिछड़े क्षेत्रों को आर्थिक एवम् शैक्षिक दृष्टि से उन्नत कर विकसित क्षेत्रों के स्तर पर उठाना।

2. पिछड़े क्षेत्रो में अस्पताल, पेयजल एवम् संचार के साधन और सुविधाएं प्रदान करना।

3. पिछड़े वर्गों और अनुसूचित जातियों की स्थिति में सुधार लाना।

4. विधवा पुर्नविवाह का समर्थन करना एवम् शराब पीना जैसी बुराईयों को समाज से दूर करना। (फारकुयूर, 27-29)

छोटू राम चाहते थे कि सरकार पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा के लिए अधिकतम सुविधाएं प्रदान करे, इसके साथ-साथ वह यह भी चाहते थे कि ऐसे पिछड़े क्षेत्रों के लोग इन शिक्षण संस्थानो का अधिक से अधिक उपयोग भी करे। इसलिए जब किसी आदोलन के दौरान सरकारी शिक्षण संस्थानो के बहिष्कार की बात कही गई तब वह हमेशा इस प्रकार के बहिष्कार के विरोधी रहे थे। क्योंकि इस पर उनका तर्क था कि ग्रामीण क्षेत्रो के अभिभावक हाल ही में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक हुए है, और यदि वे अभी से इन सरकारी शिक्षण संस्थानो का बहिष्कार करने लग गए तो ग्रामीण क्षेत्रो में शिक्षा के प्रसार होने से पहले ही शिक्षा का प्रसार समाप्त हो जाएगा। (फारकुयूर, 41) शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होंने हरियाणा के रोहतक जिले में एग्लो संस्कृत जाट हाई स्कूल की स्थापना 26 मार्च 1913 ई. में की। उन्होंने इस स्कूल के सचिव के पद पर रहते हुए, इस संस्था के विकास के लिए कई प्रयास किए। इसके अतिरिक्त उन्होंने रोहतक जिले के गांवों का व्यापक दौरा भी किया, ताकि इस संस्था के नियमित रूप से संचालन में आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त छोटू राम द्वारा हरियाणा क्षेत्र के सेना में कार्यरत सैनिको से भी इस शिक्षण संस्था के लिए दान देने का आह्वान किया गया, जिसके फलस्वरूप सैनिको द्वारा भी उदारतापूर्वक दान भेजा गया। (शास्त्री, 73-74) 1921 ई. में चौधरी छोटू राम द्वारा जाट-एग्लो संस्कृत विद्यालय के सचिव पद से इस्तीफा दे दिया गया। कुछ समय पश्चात रोहतक में ही जाट हीरोज हाई स्कूल की स्थापना कर दी गई।

इसके बाद 1918 ई. में बाबू गुला राम के निमंत्रण पर छोटू राम ने जोधपूर राज्य का दौरा किया। इस दौरे के मुख्य दो उद्देश्य थे। पहला, जाट स्कूल के लिए अनुदान प्राप्त करना। दूसरा उद्देश्य जोधपुर के जाट समाज में शिक्षा के प्रति जागृति उत्पन्न करना।(जाट गजट, 96)

इसके तुरंत पश्चात् ही यूनियनिस्ट पार्टी ने 1923 ई. में पंजाब में शिक्षा स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पेश किए गए। जिसमें पंजाब के ग्रामीण क्षेत्रो में प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय एवम् प्रत्येक कस्बो में हाई स्कूल के साथ-साथ एक इंटरमीडिएट कॉलेज भी स्थापित करने का प्रस्ताव पेश किया गया था। (जाट गजट. 96) छोटू राम ने लाहौर के सार्वजनिक पुस्तकालय पर अधिक धनराशि व्यय करने के स्थान पर ग्रामीण क्षेत्रों मे पुस्तकालय खोलने का प्रस्ताव रखा। (पंजाब लेजिस्टव असेंबली डिबेट, 330-331)

छोटू राम का एक महत्वपूर्ण योगदान यह था कि 1924 ई. में उनके द्वारा पंजाब विधान परिषद द्वारा एक प्रस्तावभी पारित करवाया गया। जिसमें राज्य के विभिन्न व्यावसायिक और

PURVA MIMAANSA

Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 16, Issue: Sep. 2025 | Impact Factor 4.765

तकनीकी संस्थानो जैसे मेडिकल कॉलेज (लाहौर), मेडिकल कॉलेज (अमृतसर), वेटिनेयरी कॉलेज (लाहौर) एवम् कृषि महाविद्यालय (लायलपुर) में ग्रामीण क्षेत्रो के छात्रो का प्राथमिकता के आधार पर दाखिला दिया जाए। (ट्रेवस्किस, 228) जिसके फलस्वरुप प्रतिवर्ष ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की प्रवेश सख्या में बढोतरी होती चली गई। (पंजाब लेजिस्टव असेंबली डिबेट, 76-78)

छोटू राम ने ग्रामीण और गरीब छात्रों के बीच चिकित्सा शिक्षा फैलाने के लिए कई कदम उठाए। जब मेडिकल स्कूल की पढ़ाई की अवधि 4 साल से बढ़ाकर 5 साल करने का प्रस्ताव आया, तो उन्होंने इसका विरोध किया। उनका कहना था कि गरीब और पिछड़े क्षेत्रों के छात्र पहले ही मेडिकल स्कूल में प्रवेश लेने से डरते हैं, और पढ़ाई की अवधि बढ़ने से उनकी संख्या और कम हो जाएगी।

छोटू राम द्वारा उपरोक्त विषय के विरोध फलस्वरूप मेडिकल अध्ययन की अवधि बढ़ाने का प्रस्ताव वापिस ले लिया गया। (खान, 119)

इसी प्रकार जब मेडिकल कालेज लाहौर में दिल्ली विश्वविद्यालय से एफ.एस.सी की परीक्षा उर्तीण करने वाले छात्रो के प्रवेश पर रोक लगाई गई तब छोटू राम द्वारा इसका विरोध किया गया। (पंजाब प्रशासनिक रिपोर्ट 1905-06, 62)

इसके अलावा रसूल स्थित इंजीनियरिंग स्कूल (निचली झेलम नहर के मुख्यद्वार पर स्थित) में अधिकांश कृषकों के बच्चो को दाखिला नहीं मिल पाता था, शिक्षा मंत्री के पद पर होते हुए छोटू राम द्वारा इस संस्थान में कृषक परिवारो के छात्रों के लिए 56 प्रतिशत सीटे आरक्षित करवा दी। (प्रौढ़ शिक्षा - समिति की रिपोर्ट, 1939, 31) छोटू राम का शिक्षा के क्षेत्र में प्रौढ़ शिक्षा का प्रयास भी महत्वपूर्ण कदम था। उन्होंने पुरुष और महिलाओं दोनों के लिए ही व्यस्को के लिए कई हाई स्कूलो की शुरूआत की व्यस्को के लिए स्थापित इन स्कूलो की संख्या 1922-23 ई. में 630 से बढ़कर 1926-27 ई. में 3784हो गई।(शास्त्री, 147)

छोटू राम द्वारा शिक्षण संस्थानो में सरकारी अनुदान प्रणाली में भी संशोधन किया गया था। इस संशोधन की महत्वूर्ण बात यह थी कि उन्होंने बिना किसी पक्षपात से किसी कॉलेज के अनुदान में वृद्धि और कमी नहीं की। परन्तु उनके द्वारा उन सभी शिक्षण संस्थानो के अनुदान में वृद्धि की, जिन शिक्षण संस्थानो के परिणाम उत्साहवर्धक थे। दूसरी तरफ ऐसे शिक्षण संस्थानो के अनुदान के कटौती भी की गई। जिन संस्थानो के परिणाम निराशाजनक थे। छोटू राम के इन कार्यों का सर्वोत्म उदाहरण तत्कालीन इस्लामिया कॉलेज लाहौर और डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर थे। इन दोनों कॉलेजो के आयुर्वेदिक और यूनानी विभागो के परिणाम निराशाजनक थे। जबकि तिब्बिया कॉलेज दिल्ली को उसके शानदार परिणामों के फलस्वरूप अनुदान राशि में वृद्धि कर दी गई। (शास्त्री, 254) छोटू राम द्वारा पंजाब के प्रत्येक गरीब व्यक्ति को सर्वोत्म शिक्षा देने की कोशिश की गई। लेकिन वह इसके साथ-साथ वह यह भी चाहते थे कि विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण संस्थानो में उचित अनुशासन बनाए रखा जाए। छोटू राम के शब्दो में "हमें अपने बच्चो को नवीनतम शैक्षिक जानकारी के ज्ञान से अवगत करने का प्रयास करना चाहिए। किन्तु साथ ही हम उनसे यह भी अपेक्षा करते है, कि वे विद्यार्थी के रूप में अपने कर्तव्यो का पालन करे और उनमें अनुशासन

भी बना रहे।" छात्रों के प्रति उनका रवैया बहुत सहानुभूतिपूर्ण था वही यदि छात्रो की मांगे अनुचित हो तब उनका रवैया अत्यधिक कठोर भी था। वे उन छात्रो के पूर्णताः विरोधी और दडित करने में सख्त थे जो किसी बाहरी कारणो से हमेशा हड़तालो पर जाने के लिए तैयार रहते थे। छोटू राम के इस कार्य का प्रमाण उन्होंने 1924 ई. में दिया जब उनके द्वारा प्रांतीय सरकार से छात्रो को सैन्य छात्रावृत्ति शीघ्र प्रदान करने का अनुरोध किया गया था। इसी प्रकार एक दूसरे मामले में औद्योगिक स्कूल के अनुसूचित जाति से संबंधित कुछ छात्रो के प्रति कठोर रूख अपनाते हुए उन्होंने स्कूल से निष्कासित कर दिया क्योंकि छात्रों द्वारा छात्रवृति की मांग पूरी होने के बाद भी उन्होंने अपनी कक्षाओ में सम्मिलित होने से इनकार कर दिया था ये छात्र इस बात को लेकर अडिंग थे कि समझौता उनके ऋणदाताओं के माध्यम से ही किया जाए। (पंजाब लेगिस्लैटिव असेंबली डिबेट, 922)

इसके अतिरिक्त छोटू राम द्वारा महिलाओं की शिक्षा के लिए भी कई कदम उठाएगए। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण ईकाईयो की स्थापना की छोटू राम पंजाब के विभिन्न जिलो में महिलाओं के लिए शिक्षण संस्थानो की स्थापना करने चाहते थे। तत्कालीन पंजाब में लगभग सभी जिलो में महिलाओं के शिक्षण संस्थान पर्याप्त संख्या में उपलब्ध थे केवल अम्बाला डिविजन में इनकी संख्या मात्र तीन ही थी। किन्तु छोटू राम की महिला शिक्षा नीति का मुख्य केन्द्र बिन्दू यह था, कि महिला शिक्षा को अनिवार्य नहीं बनाना चाहिए। इसके पीछे उनके निम्नलिखित तर्क इस प्रकार थे।

1. लड़को के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा अधिनियम 1919 ई. पूरी तरह से असफल रहा था। उदाहरण के लिए रोहतक जिले इस अधिनियम लागू होने के बाद भी ऐसे कई विद्यालय थे जिनमे एक भी छात्र का दाखिला नहीं था।

2. किसी भी लड़की को स्कूल भेजने के बारे में उसके माता-पिता से बेहतर निर्णायक कोई नहीं हो सकता। उन्होंने इस पर तर्क दिया कि यदि राज्य और स्थानीय निकायो की तरफ से लड़कियों में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए अनिवार्यता के अलावा भी कई अन्य सुविधाएं प्रदान की जाए। तब माता-पिता अपनी लड़कियों को शिक्षा देने के लिए सोच सकते है।

3. महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करने और स्कूलो में सेवा देने के प्रति पूरी तरह से अनिच्छुक थी। इसका मुख्य कारण अधिकतर माता-पिता अपनी बेटियों को पुरुष शिक्षको से शिक्षा दिलवाना पसंद नहीं करते थे। इसलिए महिलाओं की अनिवार्य शिक्षा योजना तब तक सफल नहीं हो सकती थी। जब तक प्रशिक्षित महिलाओं की उपलब्धता की कमी पूरी नहीं हो जाती।(पंजाब सरकार की वार्षिक शिक्षा रिपोर्ट, 1938-39 ई, 48-54)इन्ही तथ्यो के आधार पर छोटू राम द्वारा जब 26 मार्च 1936 को श्रीमती लेखवती जैन के उस प्रस्ताव का विरोध किया गया जिसमें उन्होंने महिलाओं के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की सिफारिश की थी। इसके पश्चात् पंजाब विधानसभा में यह प्रस्ताव खारिज हो गया था।(जाट गजट, 145) इस प्रकार छोटू राम और उनकी यूनियनिस्ट पार्टी द्वारा पंजाब में शिक्षा के प्रसार के अभूतपूर्व कार्य किए गए। जिसके फलस्वरूप प्रांत में शिक्षा पर व्यय 1920-21 ई., 1925-26 ई. और 1936-37 ई. में क्रमशः 6.76 लाख से बढ़कर 11.5 लाख और

इसके पश्चात 154.19 लाख तक पहुंच गया था। इसके साथ-साथ औद्योगिक शिक्षा पर खास ध्यान दिया गया जिस पर शिक्षा का 83 प्रतिशत व्यय किया गया।तत्कालीन आकड़ों के अनुसार जहां 1923-24 में प्राथमिक अनिवार्य शिक्षा योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रो में 156 प्राथमिक विद्यालय थे। वही 1938-39 ई. में इनकी संख्या बढ़कर 2947 हो गई। वही 1917 ई. में मीडिल और हाई स्कूलो की संख्या भी क्रमशः 161 से बढ़कर 363 तथा हाई स्कूलो की संख्या भी बढ़कर 309 से बढ़कर 406 हो गई थी। 1923-24 ई. में प्रांत में केवल 5 इटरकॉलेज थे 1938-39 ई. तक जिनकी संख्या बढ़कर 38 हो गई थी। इसी प्रकार 1938-39 ई. में छात्रो की संख्या 1,65,599 थी जिनमें से 12558 की छात्राएं नवमी और दसवी की शिक्षा ग्रहण कर रही थी। इसी प्रकार विश्वविद्यालय में 1929-30 ई. महिलाओं की संख्या 161 थी वह भी 1938-39 ई. में बढ़कर 564 तक हो गई। (शास्त्री,150) शिक्षा व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के अतिरिक्त छोटू राम ने ग्रामीण जनता के सामाजिक उत्थान के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किए।

उपरोक्त वर्णन के आधार कहा जा सकता है कि छोटू राम ने तत्कालीन पंजाब में शिक्षा के क्षेत्र में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। उनके द्वारा पंजाब के सभी जिलो में शिक्षा स्तर को ऊपर उठाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने पंजाब के सभी वर्गो को शिक्षित करने की कोशिश की। जिसके तहत उन्होंने पंजाब के प्रत्येक जिले में अधिक से अधिक स्कूलो का निर्माण करवाया तथा उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर सरकार से अनुदान भी दिलवाया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सीतारामयण, पी. हिस्ट्री ऑफ दी इण्डियन नेशनल कांग्रेस, वाल्यूम 1, प्रकाशन द बॉम्बे क्रॉनिकल प्रेस बॉम्बे 1946.

फारकुयूर, जे.एन. मार्डन रिलिजियंस मूवमेंट इन इंडिया,प्रकाशन मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड लंदन 1929.

शास्त्री, आर.एस. चौधरी छोटू राम जीवन चरित, प्रकाशन जय भारत पब्लिकेशन रोहतक 1965.

जाट गजट अनुवादित 23 अप्रैल 1918, रोहतक.

ट्रेवस्किस, एच.के, दी लैंड ऑफ फाइव रिवर्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लंदन 1928.

पंजाब लेजिस्टव असेंबली डिबेट, वाल्यूम 9, द गवर्नमेंट ऑफ पंजाब लाहौर, पृष्ठ.

खान, सनाउल्लाह. ए हिस्ट्री आफ एजूकेशन इन दी पंजाब, वाल्यूम 1, द यूनाइटेड प्रिंटिंग प्रेस लाहौर, 1932.

पंजाब प्रशासनिक रिपोर्ट 1905-06, सिविल एंड मिलट्री गैजेट प्रेस लाहौर.

प्रौढ़ शिक्षा - समिति की रिपोर्ट, 1939, प्रकाशन सुपरिटेंडेंट गवर्नमेंट प्रिंटिंग, पंजाब लाहौर 1940.

पंजाब लेगिस्लैटिव असेंबली डिबेट, वाल्यूम 28, 196, प्रकाशन पंजाब गवर्नमेंट लाहौर.

पंजाब सरकार की वार्षिक शिक्षा रिपोर्ट, 1938-39 ई. प्रकाशन पंजाब गवर्नमेंट लाहौर.

जाट गजट अनुवादित 15 जून 1927 रोहतक.